कलाम

KALAM ACADEMY, SIKAR

3rd Grade Test Series-2025 L-2 [SST] Minor - 02 [REVISED ANSWER KEY] HELD ON : 18/08/2025

Q.	**1**	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**	**17**	**18**	**19**	**20**
Ans.	2	1	4	2	3	3	2	1	3	1	4	4	3	3	4	3	4	3	3	3
Q.	**21**	**22**	**23**	**24**	**25**	**26**	**27**	**28**	**29**	**30**	**31**	**32**	**33**	**34**	**35**	**36**	**37**	**38**	**39**	**40**
Ans.	4	4	2	4	3	4	1	3	1	2	2	2	1	2	1	3	3	2	1	2
Q.	**41**	**42**	**43**	**44**	**45**	**46**	**47**	**48**	**49**	**50**	**51**	**52**	**53**	**54**	**55**	**56**	**57**	**58**	**59**	**60**
Ans.	1	1	3	3	2	4	4	2	4	1	2	3	3	4	2	1	2	4	1	1
Q.	**61**	**62**	**63**	**64**	**65**	**66**	**67**	**68**	**69**	**70**	**71**	**72**	**73**	**74**	**75**	**76**	**77**	**78**	**79**	**80**
Ans.	3	3	1	3	3	4	2	1	3	2	2	1	1	4	2	1	1	2	1	2
Q.	**81**	**82**	**83**	**84**	**85**	**86**	**87**	**88**	**89**	**90**	**91**	**92**	**93**	**94**	**95**	**96**	**97**	**98**	**99**	**100**
Ans.	3	1	4	2	1	2	2	3	1	1	4	3	1	4	1	3	3	4	4	2
Q.	**101**	**102**	**103**	**104**	**105**	**106**	**107**	**108**	**109**	**110**	**111**	**112**	**113**	**114**	**115**	**116**	**117**	**118**	**119**	**120**
Ans.	1	4	4	1	2	3	4	1	2	4	2	4	1	3	1	1	4	3	1	1
Q.	**121**	**122**	**123**	**124**	**125**	**126**	**127**	**128**	**129**	**130**	**131**	**132**	**133**	**134**	**135**	**136**	**137**	**138**	**139**	**140**
Ans.	2	3	2	3	2	3	1	1	3	1	3	2	2	1	3	2	2	4	2	3
Q.	**141**	**142**	**143**	**144**	**145**	**146**	**147**	**148**	**149**	**150**										
Ans.	3	1	3	3	4	3	3	3	1	1										

1. Ans. 2

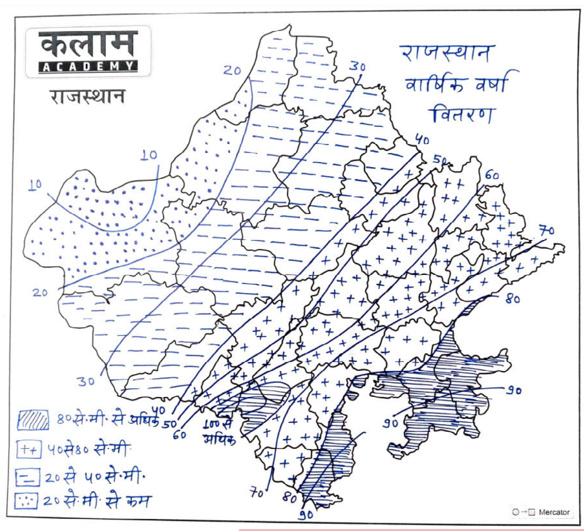

2. Ans. 1

3. Ans. 4

अर्द्धशुष्क/स्टेपी जलवायु प्रदेश

- 25 सेमी समवर्षा रेखा व अरावली के मध्य के क्षेत्र में अर्द्धशुष्क जलवायु मिलती है।
- इस क्षेत्र में औसत वार्षिक वर्षा 25 सेमी से अधिक व 50 सेमी से कम होती है।
- जोधपुर इस जलवायु प्रदेश का प्रतिनिधि जिला है।
- इसमें गंगानगर, बीकानेर, जोधपुर, बाड़मेर, टोंक, चूरू, सीकर, झुन्झुनूं, नागौर, पाली व जालौर का अधिकांश क्षेत्र आता है।

4. Ans. 2

- **कोपेन के जलवायु वर्गीकरण में प्रयुक्त वर्णाक्षरों का अर्थ**– A-उष्ण आर्द्र, B-शुष्क, C-उपार्द्र, W-पूर्ण शुष्क, S-अर्द्ध शुष्क/स्टेपी, w-शीत शुष्क, s-ग्रीष्म शुष्क, h-गर्म, g-गंगा तुल्य जलवायु।

5. Ans. 3

- सामान्यत: राजस्थान में होने वाली औसत वार्षिक वर्षा **57.51 सेमी.** है।
- राजस्थान की औसत वार्षिक वर्षा भारत में सबसे कम है अत: राजस्थान भारत का सबसे शुष्क व कम वर्षा वाला राज्य है।
- आर्थिक समीक्षा 2024–25 के अनुसार राज्य में 1 जून से 30 सितम्बर 2024 तक की समयावधि में वास्तविक वर्षा 662.44 मिमी दर्ज की गई जो कि सामान्य वर्षा 417.46 मिमी की तुलना में 58.68 प्रतिशत अधिक रही है।

6. Ans. 3

- अक्टूबर के प्रारम्भ में कर्क रेखा पर बना न्यून दाब का क्षेत्र समाप्त हो जाता है, अत: मानसूनी हवाएँ लौटने लगती हैं।
- मानसूनी हवाओं का लौटना मानसून का प्रत्यावर्तन कहलाता है।
- **मानसून का प्रत्यावर्तन शरद् ऋतु (अक्टूबर से दिसम्बर)** के दौरान होता है।
- इस समय हवाएँ शांत, हल्की व अत्यधिक परिवर्तनशील होती हैं।
- इस ऋतु में राजस्थान में वर्षा नहीं होती है।

7. Ans. 2

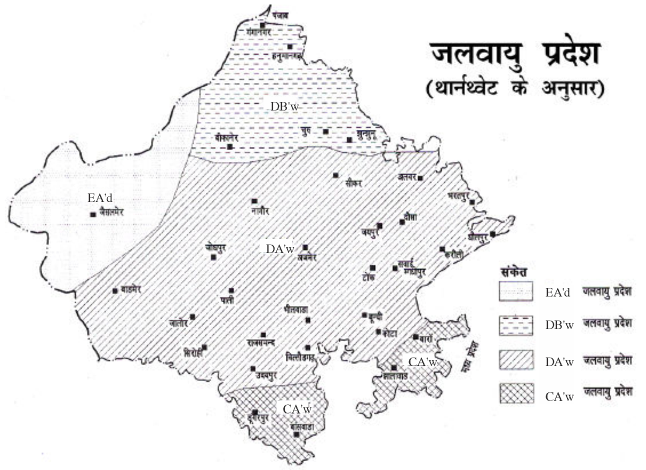

8. Ans. 1

- **पछुआ पवनों** के साथ भूमध्य सागर से आने वाले **शीतोष्ण कटिबन्धीय चक्रवातों** से राजस्थान समेत उत्तरी पश्चिमी भारत में शीतकालीन वर्षा होती है।
- इन **भूमध्य सागरीय चक्रवातों** को **पश्चिमी विक्षोभ/गोल्डन ड्रोप** भी कहते हैं।
- **पश्चिमी विक्षोभ** के कारण होने वाली शीतकालीन वर्षा को स्थानीय भाषा में **'मावठ'** कहते है। जो जनवरी फरवरी में होती है। **मावठ'** रबी की फसल विशेषकर **गेहूँ, चना, जौ, सरसों, मालटा एवं किन्नू** के लिए वरदान होती है।

9. Ans. 3

BShw - यह जलवायु अर्द्धशुष्क या स्टेपी जलवायु प्रदेश में पाई जाती है जिसके अंतर्गत दक्षिणी जैसलमेर, बाड़मेर, जालौर, सिरोही, पाली, जोधपुर, नागौर, सीकर, चुरू, झुन्झुनूं जिले आते हैं। नागौर जिला इसका प्रतिनिधि जिला है।

10. Ans. 1

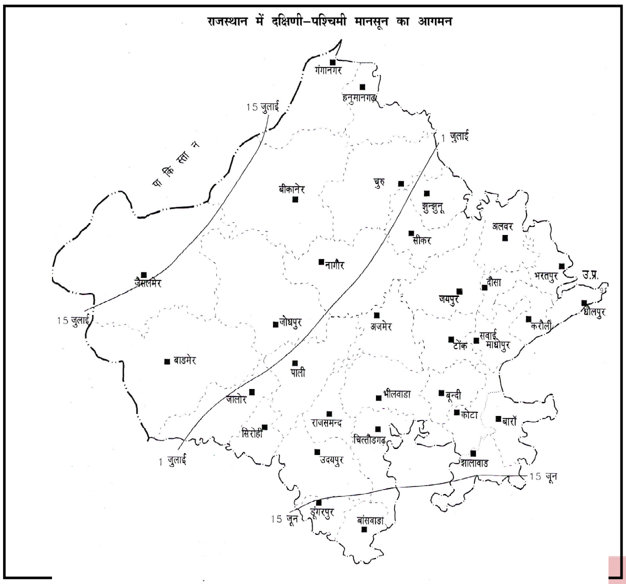

11. Ans. 4

- राजस्थान में वर्षा ऋतु का काल मध्य जुलाई से सितम्बर तक है। जिसमें हिन्द महासागर की ओर से दक्षिणी-पश्चिमी मानसूनी पवनें चलती हैं।
- राजस्थान में मानसून के पहुँचने की सामान्य तिथि 15 जून है। लेकिन 15 से 20 जून या जून के अंतिम सप्ताह तक मानसून राजस्थान में प्रवेश करता है।
- राजस्थान की कुल वार्षिक वर्षा की 90 से 95 प्रतिशत वर्षा मानसूनी पवनों से होती है। (जुलाई से सितम्बर तक 3 माह में)

12. Ans. 4

- कई बार संवहन करती हुई वायु के साथ समुद्र की ओर से आने वाली आर्द्र हवाएँ मिलती हैं। जिससे वज्र तूफान (Thunder Storm) बनते हैं, जिनमें तड़ित (बिजली), मेघ गर्जन के साथ वर्षा व ओलावृष्टि भी होती है। इस वर्षा को मानसून पूर्व की वर्षा (Pre Monsoon) भी कहा जाता है, जो अप्रेल-मई माह में होती है।
- राजस्थान में उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर चलने पर वायु की तीव्रता का प्रभाव कम होता जाता है, राज्य के दक्षिणी व दक्षिणी-पूर्वी भाग का पर्वतीय, पठारी व वनस्पति युक्त होना भी वायु के प्रभाव को कम करता है।

13. Ans. 3

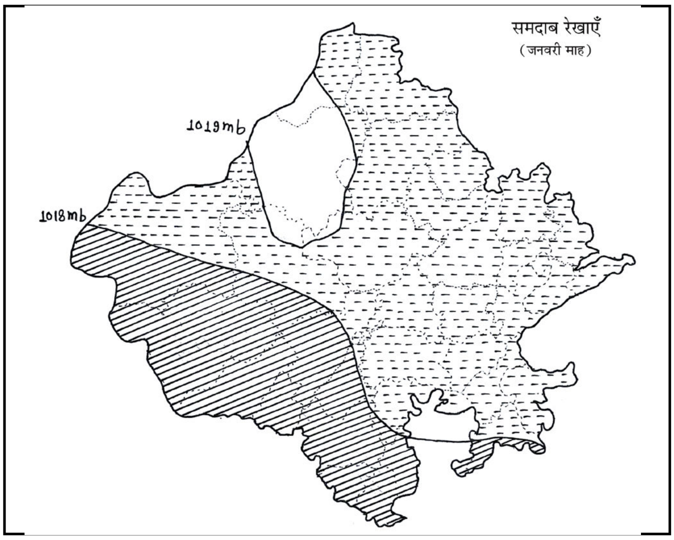

14. Ans. 3

- अरब सागरीय शाखा के मार्ग में अवरोध नहीं होने के कारण मानसूनी पवनें बिना रूके आगे बढ़ जाती है।
- अरब सागरीय शाखा से केवल दक्षिणी राजस्थान (मुख्यत: सिरोही) में वर्षा होती है।
- बंगाल की खाड़ी वाली शाखा के लिए अरावली की अवस्थिति अवरोध उत्पन्न करती है अत: इस शाखा से राजस्थान में अधिकांश वर्षा प्राप्त होती है तथा यह शाखा मुख्यत: राजस्थान के पूर्वी भाग में वर्षा करवाती है।

नोट- सम्पूर्ण राजस्थान में बंगाल की खाड़ी शाखा से अधिक वर्षा प्राप्त होती है। केवल दक्षिणी राजस्थान में अरब सागर की शाखा से अधिक वर्षा होती है।

- दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम व पूर्व से पश्चिम की ओर जाने पर वर्षा की मात्रा कम होती जाती है तथा वर्षा की अनिश्चितता व परिवर्तनशीलता बढ़ती जाती है।

15. Ans. 4

Aw - यह जलवायु उष्ण कटिबंधीय आर्द्र जलवायु प्रदेश में पाई जाती है जिसके अंतर्गत डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, दक्षिणी चित्तौड़गढ़, झालावाड़, दक्षिणी बाराँ जिले आते हैं। बाँसवाड़ा जिला इसका प्रतिनिधि जिला है। ये प्रदेश सवाना तुल्य घास के मैदानों से साम्यता रखते हैं।

16. Ans. 3

- सर्वाधिक दैनिक तापान्तर- जैसलमेर (सम)।
- सर्वाधिक वार्षिक तापान्तर- चूरू।
- सर्वाधिक दैनिक तापान्तर वाले माह- अक्टूबर व नवम्बर।
- न्यूनतम दैनिक तापान्तर वाले माह- जुलाई व अगस्त।

17. Ans. 4

बंगाल की खाड़ी शाखा

- राजस्थान में अरब सागर की शाखा से बंगाल की खाड़ी की शाखा की तुलना में अत्यन्त कम वर्षा होती है क्योंकि अरब सागरीय शाखा की दिशा अरावली पर्वतमाला के समानान्तर दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व है अत: अरब सागरीय शाखा के मार्ग में अवरोध नहीं होने के कारण ये बिना रूके आगे बढ़ जाती है।
- अरब सागरीय शाखा से केवल दक्षिणी राजस्थान (मुख्यत: सिरोही) में वर्षा होती है।
- बंगाल की खाड़ी वाली शाखा के लिए अरावली की अवस्थिति अवरोध उत्पन्न करती है अत: इस शाखा से राजस्थान में अधिकांश वर्षा प्राप्त होती है तथा यह शाखा मुख्यत: राजस्थान के पूर्वी भाग में वर्षा करवाती है।

18. Ans. 3

- राजस्थान में सर्वाधिक लौह अयस्क जयपुर व दौसा से उत्पादित किया जाता है।

जिला	प्रमुख क्षेत्र
जयपुर	मोरीजा-बानोल, बोमानी, चौमू सामोद क्षेत्र
दौसा	नीमला-रायसेला, लालसोट क्षेत्र
उदयपुर	नाथरा की पाल, थूर-हुण्डेर
सीकर	रामपुरा, डाबला
झुंझुनू	डाबला-सिंघाना, ताओन्दा, काली पहाड़ी
भीलवाड़ा	पुर-बनेड़ा, जहाजपुर, बीगोद
बूंदी	लोहारपुरा, मोहनपुरा
करौली	देदरोली, खोरा, लिलोती, टोडूपुरा

19. Ans. 3

राजस्थान के बजट 2025-26 के प्रावधानों के अनुसार '**इंस्टीट्यूट ऑफ माइन्स**' की स्थापना **उदयपुर** में किया जाना प्रस्तावित है।

20. Ans. 3

- राज्य में ताँबे के 13 करोड़ टन से अधिक के भण्डार हैं, जिनमें से 9 करोड़ टन के लगभग ताँबा भण्डार खेतड़ी सिंघाना क्षेत्र (झुन्झुनूं के खेतड़ी-सिंघाना से सीकर के रघुनाथगढ़ तक पट्टी) में पाये जाते हैं।

उत्पादन क्षेत्र-

- **अलवर**- खो - दरीबा, थानागाजी, कुशलगढ़, सेनपरी, भगत का बास, भगोनी।
- **अजमेर**- हनोतिया व गोलिया, सावर, मोहनपुरा, फरकिया

21. Ans. 4

खनिज - उत्पादक क्षेत्र
फेल्सपार - मकरेरा (अजमेर)
मेग्नेसाइट- अजमेर, सेन्दड़ा (पाली)
वर्मीक्यूलाइट - अजमेर
बॉल क्ले - **बीकानेर**
चाइना क्ले (कैओलिन) - **अलवर,** बाड़मेर, भीलवाड़ा, बीकानेर
बेण्टोनाइट - **बाड़मेर, बीकानेर,** सवाईमाधोपुर
फ्लोर्सपार / फ्लोराइट - मांडो की पाल (डूंगरपुर), चौकरी-चापोली (सीकर)
पाइराइट - सलादीपुरा (सीकर)
जास्पर - जोधपुर

रॉक फॉस्फेट - उदयपुर, जैसलमेर, बाँसवाड़ा, जयपुर

22. Ans. 4

रॉक फॉस्फेट -

प्रमुख उत्पादन क्षेत्र-

- **उदयपुर** - झामर कोटड़ा, डाकन कोटड़ा, माटोन, ढोल की पाटी, सीसारमा, कानपुर
- **जैसलमेर** - बिरमानिया, लाठी, फतेहगढ़

कैल्साइट -

प्रमुख उत्पादन क्षेत्र-

- **सिरोही**- बेल्का पहाड़, खिला
- **उदयपुर**- गेफल, राबचा, ढिंकली
- **भीलवाड़ा**- खेड़ा तरला, तेजा का बास, अमलदा, घरटा, जैतपुरा

कलाम ACADEMY

बैराइट्स –

प्रमुख उत्पादन क्षेत्र–

- **उदयपुर**– रेलपातलिया
- **अलवर**– सैनपुरी, जाहिर का खेड़ा, भानखेड़ा, रामसिंहपुरा, करोली, जामरोली, उमरेण, गिरारा, धोलेरा
- **राजसमंद**– देलवाड़ा–केसुली–नाथद्वारा बेल्ट

फ्लोराइट –

मांडो की पाल (डूंगरपुर), चौकरी–चापोली (सीकर)

23. Ans. 2

जैसलमेर बेसिन के प्राकृतिक गैस क्षेत्र–

- मनिहारी टिब्बा, चिन्नेवाला टिब्बा, कमली ताल, मोहनगढ़, रामगढ़, घोटारु, तनोट, डांडेवाला, सादेवाला, बाघेवाला, राजेश्वरी, बकरीवाला।
- घोटारु में हीलियम मिश्रित उच्च श्रेणी की गैस के भण्डार मिले हैं।

नोट – रोहिल क्षेत्र सीकर का यूरेनियम उत्पादक क्षेत्र है।

24. Ans. 4

राजस्थान के एकाधिकार (100%) वाले खनिज

- सीसा–जस्ता
- सेलेनाइट
- वॉलेस्टोनाइट

विभिन्न खनिजों के उत्पादन में राजस्थान का प्रतिशत अंश

- जिप्सम (93%)
- एस्बेस्टोस (89%)
- घीया पत्थर / सोपस्टोन (85%)
- रॉक फॉस्फेट (90%)
- फेल्सपार (70%)
- केल्साइट (70%)
- वुल्फ्रेमाइट (50%)
- तांबा (36%)
- अभ्रक (22%)

25. Ans. 3

- राजस्थान में 81 विभिन्न प्रकार के खनिजों के भण्डार हैं। इनमें से वर्तमान में 58 प्रकार के खनिजों का खनन किया जा रहा है।
- देश में सर्वाधिक खनिज विविधता राजस्थान में पायी जाती हैं। इस कारण राजस्थान को खनिजों का अजायबघर कहते हैं।
- राजस्थान में सर्वाधिक खनिज भण्डारण अरावली में पाया जाता है, इसलिए अरावली को ''खनिजों का भण्डारगृह'' कहा जाता है।
- राजस्थान में खनिजों का क्षेत्रीय वितरण किसी एक प्राकृतिक विभाग में संकेन्द्रित न होकर छितरा हुआ है।
- अधात्विक खनिजों के उत्पादन में राजस्थान प्रथम स्थान पर है।
- खानों की संख्या की दृष्टि से राजस्थान का देश में प्रथम स्थान है तथा देश की 19 प्रतिशत खानें यहाँ स्थित है।

26. Ans. 4

डोलोमाइट उत्पादन क्षेत्र–

- बिट्ठलदेव, त्रिपुरा सुन्दरी, (बांसवाड़ा)
- इसवाल, करोली–कसोली (राजसमन्द)
- धारियावाद (प्रतापगढ़)
- बाजला–काबरा (अजमेर)
- माण्डल (भीलवाड़ा),
- गौरेला–चांदा, खेड़ी (चित्तौड़गढ)
- कोटपुतली, भैंसलाना, रामगढ़ (जयपुर)

27. Ans. 1

पन्ना		**उत्पादन क्षेत्र–**
• राजसमन्द	–	कालागुमान, टिक्की (तीखी), देवगढ़, गढ़बोर
• उदयपुर	–	गोगुन्दा
• अजमेर	–	राजगढ़

तामड़ा उत्पादन क्षेत्र–

• टोंक	–	राजमहल, जनकपुरा, कुशलपुरा, गांवरी, बागेश्वर
• अजमेर	–	सरवाड़, खरखारी
• भीलवाड़ा	–	कमलपुरा, बलियाखेड़ा

हीरा उत्पादन क्षेत्र–

• प्रतापगढ़	–	केसरपुरा, मानपुरा

कलाम ACADEMY

28. Ans. 3

- **भीलवाड़ा- रामपुरा आगूचा,** गुलाबपुरा, पुर बनेड़ा, तिरंगे, समुदी, देवास, देवपुरा, रेवाड़ा (यहाँ से प्राप्त जस्ता के शोधन हेतु चित्तौड़गढ़ जिले के चंदेरिया मे निजी क्षेत्र में वेदांता कंपनी द्वारा एक जिंक स्मेल्टर संयंत्र स्थापित किया गया है।)

29. Ans. 1

कोयला उत्पादन क्षेत्र-

- **बाड़मेर** - गिरल, कपूरड़ी, जालीपा, बोथिया, भाड़खा, गुंगा, शिव
- **नागौर** - कसनऊ, इग्यार, मातासुख, मोकला, मेड़ता रोड़
- **बीकानेर** - पलाना, बरसिंगसर, चानेरी, गुढ़ा, बीथनोक, हाड़ला, गंगा सरोवर, मुंध, माधोगढ़, केसरदेशर
- लिग्नाइट कोयला जैसलमेर क्षेत्र में भी मिलता है।

30. Ans. 2

सोना उत्पादन क्षेत्र-

- **बाँसवाड़ा** - जगपुरा भूकिया, आनंदपुरा भूकिया, देलवारा पेटी।

अभ्रक उत्पादन क्षेत्र-

- भीलवाड़ा - नात की नेरी, तूनका (टूंका), सिंदिरियास, दांता भूणास
- टोंक - बरला, मानखण्ड
- जयपुर - लक्ष्मी तथा बंजारी, मोती की खान
- उदयपुर - भगतपुरा, चम्पागुढ़ा

मैगनीज उत्पादन क्षेत्र-

- **बाँसवाड़ा** - लीलवानी, नरड़िया, काला खूंटा, तलवाड़ा, सिवोनिया, कांसला, कांचला, रूपाखेड़ी व खेरिया, इटाला, घाटिया, ताँबेसरी (गुरारिया से राठी मुरी बेल्ट), तिम्यामौरी/तिम्मामौरी।
- **उदयपुर** - छोटी सर, बड़ी सर, सरुपपुर, रामौसन
- **राजसमन्द** - नेगड़िया

ताँबा उत्पादन क्षेत्र-

- **झुन्झूनूँ** - खेतड़ी - सिंघाना क्षेत्र, चाँदमारी, कोल्हन, मन्धान (मदान - कुदान), अकावाली (अखवाली), बरखेड़ा, बबाई, बनवासा, ढोलमाला, चिंचोरी, सतकुई, सूरहरि, टुण्डा, करमारी, आदि।

31. Ans. 2

राजस्थान खनिज नीति 2024

- **प्रारम्भ** - 4 दिसम्बर, 2024
- राजस्थान खनिज नीति 2024 का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण तथा सामुदायिक कल्याण सुनिश्चित करते हुए आर्थिक विकास के लिए राज्य के प्रचुर खनिज संसाधनों का लाभ उठाते हुए टिकाऊ, पारदर्शी और जिम्मेदार खनिज विकास को बढ़ावा देना है।
- **विजन** -आर्थिक वृद्धि, तकनीकी के साथ रोजगार सृजन तथा धारणीय संसाधन प्रबंधन द्वारा राजस्थान को भारत के खनिज क्षेत्र में एक नेतृत्वकारी राज्य के रूप में स्थापित करना।

32. Ans. 2

- चाइना क्ले को **केओलिन** नाम से भी जाना जाता है। जो मुख्यतया अलवर, बाड़मेर, भीलवाड़ा व बीकानेर में पाई जाती है।

33. Ans. 1

बाड़मेर-सांचौर बेसिन के ऑयल फील्ड-

- **मंगला, भाग्यम, एश्वर्या, कामेश्वरी, रागेश्वरी, वंदना, सरस्वती, शक्ति, विजया** आदि।

34. Ans. 2

अधात्विक खनिज
↓

- **आणविक खनिज :** यूरेनियम, थोरियम, अभ्रक, लिथियम इत्यादि।
- **उर्वरक खनिज :** जिप्सम, रॉक फास्फेट, पोटाश, पाइराइट्स इत्यादि।
- **क्ले खनिज :** फायर क्ले, बॉल क्ले, चाइना क्ले, मुल्तानी मिट्टी इत्यादि।
- **बहुमूल्य पत्थर :** पन्ना, हीरा, तामड़ा इत्यादि।
- **इमारती पत्थर :** संगमरमर, ग्रेनाइट, सैण्ड स्टोन इत्यादि।
- **ऊर्जा खनिज :** प्राकृतिक गैस, पेट्रोलियम, कोयला इत्यादि।
- **अन्य खनिज :** ऐस्बेस्टॉस, गेरु, फेल्सपार इत्यादि।

कलाम ACADEMY

35. Ans. 1

- **डिस्ट्रिक्ट मिनरल फाउंडेशन** (डी.एम.एफ.) एक गैर - लाभकारी निकाय के रूप में स्थापित एक ट्रस्ट है, जो खनन कार्यों से प्रभावित जिलों में, खनन प्रभावित व्यक्तियों और क्षेत्रों के हित और लाभ के लिए काम करता है।

36. Ans. 3

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 155 के अनुसार राज्य के राज्यपाल को राष्ट्रपति द्वारा अपने हस्ताक्षर और मुद्रा सहित अधिपत्र द्वारा नियुक्त किया जाता है।

37. Ans. 3

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 192 के अनुसार - राज्य विधानमंडल का कोई सदस्य अनु. 191(1) में वर्णित निर्हरता से ग्रस्त होने पर इनकी अयोग्यता (दल-बदल को छोड़कर) से संबंधित विवाद का निर्णय राज्यपाल करता है। ऐसा निर्णय करने से पहले राज्यपाल राष्ट्रीय निर्वाचन आयोग से राय लेता है तथा उसकी राय के अनुसार कार्य करता है। राज्यपाल का यह निर्णय अंतिम होता है।

38. Ans. 2

- राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिशों के आधार पर 1 नवम्बर, 1956 ई. से 7वें संविधान संशोधन द्वारा राजस्थान को राज्य की श्रेणी में शामिल किया गया। अत: इस दिन से राजस्थान में राजप्रमुख का पद समाप्त कर दिया गया तथा राज्यपाल का पद सृजित हुआ। **श्री गुरुमुख निहाल सिंह** को **25 अक्टूबर, 1956 ई.** को राजस्थान के पहले राज्यपाल के रूप में नियुक्त किया गया। इन्होंने अपना पदभार 1 नवम्बर, 1956 को संभाला।

39. Ans. 1

- 7वें संविधान संशोधन 1956 की **धारा 7** द्वारा अनुच्छेद 158(3क) जोड़कर यह प्रावधान किया गया कि यदि दो या अधिक राज्यों का एक राज्यपाल है तो उसको दिये जाने वाली उपलब्धियाँ और भत्ते राष्ट्रपति द्वारा तय मानकों के हिसाब से राज्य मिलकर प्रदान करेंगे।

40. Ans. 2

- मुख्यमंत्री के कर्त्तव्यों का उल्लेख संविधान के अनुच्छेद 167 में है जो कि निम्न है-

  अनुच्छेद 167 के अनुसार मुख्यमंत्री का यह कर्त्तव्य होगा कि वह-

  (a) राज्य सरकार के प्रशासनिक और विधायी मामलों से संबंधित **मंत्रिपरिषद के विनिश्चिय की सूचना** राज्यपाल को देगा।

  (b) राज्य सरकार के प्रशासनिक और विधायी मामलों से संबंधित जो जानकारी राज्यपाल माँगे, वह उसे देगा।

  (c) किसी विषय जिस पर किसी मंत्री ने विनिश्चिय कर लिया हो लेकिन मंत्रिपरिषद ने विचार नहीं किया हो तो राज्यपाल के अपेक्षा किये जाने पर वह उसे मंत्रिपरिषद के समक्ष विचार हेतु रखेगा।

41. Ans. 1

- राजस्थान के वर्तमान मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा क्रमश: 26वें और व्यक्तिश: 14वें मुख्यमंत्री है। इन्होंने 15 दिसम्बर, 2023 को मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण की।

42. Ans. 1

- विधानसभा में सदस्यों का **प्रत्यक्ष निर्वाचन सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार** के आधार पर होता है।
- फर्स्ट पास्ट द पोस्ट सिस्टम से गुप्त मतदान प्रणाली से होता है। इस प्रकार कथन में खुली मतदान प्रणाली गलत है क्योंकि विधानसभा सदस्यों का निर्वाचन बंद मतदान प्रणाली से होता है।

43. Ans. 3

- विधानमंडल के लिए संविधान के विभिन्न अनुच्छेद व उनमें उल्लेखित प्रावधान निम्नानुसार हैं-

  1. अनुच्छेद 172 - विधानसभा का कार्यकाल
  2. अनुच्छेद 173 - विधानमंडल के सदस्यों की योग्यताएँ
  3. अनुच्छेद 188 - विधानमंडल के सदस्यों की शपथ के संबंध का प्रावधान।
  4. अनुच्छेद 191 - विधानमंडल के सदस्यों की अयोग्यताएँ

कलाम ACADEMY

44. Ans. 3

45. Ans. 2

- **अनु. 214** के तहत प्रत्येक राज्य के लिए एक उच्च न्यायालय होगा।
- **अनु. 231**- संसद विधि बनाकर दो या अधिक राज्यों के लिए अथवा दो या अधिक राज्यों और किसी संघ शासित प्रदेश के लिए एक ही उच्च न्यायालय स्थापित कर सकती है।
- भारत के संविधान में प्रत्येक राज्य के लिए एक उच्च न्यायालय की व्यवस्था की गई है लेकिन **7वें संविधान संशोधन अधिनियम** 1956 में संसद को अधिकार दिया गया है कि वह दो या दो से अधिक राज्यों एवं एक संघ राज्य क्षेत्र के लिए एक साझा उच्च न्यायालय की स्थापना कर सकती है।

46. Ans. 4

- राजस्थान उच्च न्यायालय के संदर्भ में कुछ विशेष तथ्य –
  प्रथम मुख्य न्यायाधीश- के.के.वर्मा (कमलकांत वर्मा)
  वर्तमान मुख्य न्यायाधीश – के.आर.श्रीराम
  सर्वाधिक अवधि तक रहने वाले मुख्य न्यायाधीश- कैलाश वांचू
  राजस्थान उच्च न्यायालय के ऐसे न्यायाधीश जिन्होंने अपना पद त्याग (Resigned) किया – एस.के.गर्ग

47. Ans. 4

- राज्य शासन सचिवालय वह स्थान है जहाँ से शासन व प्रशासन के सत्ता-सूत्रों का संचालन होता है। राजस्थान शासन सविचालय का एकीकृत रूप **13 अप्रेल** 1949 में अस्तित्व में आया।
- **मुख्य सचिव का चयन राज्य का मुख्यमंत्री करता है।**
- **अवशिष्ट वसीयतदार**- मुख्य सचिव वे सभी कार्य भी करता है जो विशिष्ट रूप से किसी सचिव को आवण्टित नहीं किये जाते है
- वर्तमान मुख्य सचिव – **श्री सुंधाश पंत**

48. Ans. 2

- राजस्थान उच्च न्यायालय के संदर्भ में तथ्य –
  राज्य के प्रथम मुख्य सचिव – के. राधाकृष्णन्
  सर्वाधिक अवधि वाले मुख्य सचिव – भगतसिंह मेहता
  न्यूनतम कार्यकाल वाले मुख्य सचिव – आर.डी. थापर
  मुख्य सचिव जो सचिवालय पुनर्गठन समिति (1969) के अध्यक्ष रहे – मोहन मुखर्जी

49. Ans. 4

- जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण का अध्यक्ष (आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005 की धारा 25 के द्वारा राज्य सरकार द्वारा निर्धारित) जिला कलेक्टर होता है।

50. Ans. 1

- राजस्थान पुलिस का गठन जनवरी, 1951 में किया गया तथा राजस्थान पुलिस सेवा का गठन भी वर्ष 1951 में हुआ।

51. Ans. 2

- बलवंत राय मेहता समिति की सिफारिश के आधार पर पंचायती राज अधिनियम पारित कर उसे लागू करने वाला राजस्थान पहला राज्य बना।
- 2 अक्टूबर, 1959 को नागौर जिले के बगदरी गाँव में प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने देश की पहली त्रिस्तरीय पंचायती राज प्रणाली की शुरूआत की।

52. Ans. 3

- ग्राम सभा का उल्लेख संविधान के अनुच्छेद 243A में है।
- ग्राम सभा में गाँव के समस्त मतदाता शामिल होते हैं।
- ग्राम सभा की बैठक हेतु 1/10 सदस्यों (गणपूर्ति) की उपस्थिति अनिवार्य होती है।

53. Ans. 3

- नगरीय निकायों हेतु संविधान के विभिन्न अनुच्छेद निम्नानुसार है-

243P	-	परिभाषाएँ
243Q	-	नगरपालिकाओं का गठन
243R	-	नगरपालिकाओं की सरंचना
243S	-	वार्ड समितियों आदि का गठन और सरंचना

54. Ans. 4

- दिनाँक 17 जुलाई, 2025 को जारी नोटिफिकेशन के द्वारा राजस्थान लोक सेवा आयोग में एक अध्यक्ष व 10 सदस्यों (कुल 11) का प्रावधान किया गया है।

कलाम ACADEMY

55. Ans. 2

क्र.सं.	काल-परक	प्रवृत्ति-परक	काल-परक
1	प्राचीन काल	वीरगाथा काल	1050 से 1450 ई.
2	पूर्व मध्य काल	भक्तिकाल	1450 से 1650 ई.
3	उत्तर मध्य काल	श्रृंगार, रीति एवं नीतिपरक काल	1650 से 1850 ई.
4	आधुनिक काल	विविध विषयों एवं विधाओं से युक्त	1850 ई. से अब तक

56. Ans. 1

- ख्यात वंशावली तथा प्रशस्ति लेखन का विस्तृत रूप है। ख्यातों में राजवंश की पीढ़ियाँ, जन्म मरण की तिथियाँ, किन्हीं विशेष घटनाओं का उल्लेख तथा जिस वंश के लिए ख्यात लिखी गई हो उसके व्यक्ति विशेष के जीवन संबंधी विवरण रहता है।
- ख्यातों का विस्तृत रूप 16वीं शताब्दी के अन्त से बनना आरम्भ हुआ तो इससे पहले का वर्णन कल्पना के आधार पर दिया गया। अर्थात् 16वीं शताब्दी के पूर्व का वर्णन जो इन ख्यातों से उपलब्ध होता है अधिकांश में कपोल कल्पित ही है।

57. Ans. 2

रास-
- यह साहित्य की ऐसी विधा है जिसमें नृत्य, गायन और अभिनय तीनों कलाओं का समावेश मिलता है।

चर्चरी-
- ये रचनाएँ विभिन्न उत्सवों में ताल व नृत्य के साथ गायी जाती है।

सोरठा-
- ये छंद एवं दोहों के रूप में होते हैं।

58. Ans. 4

बीसलदेव रासो, बसंत विलास, मलय सुंदरी कथा प्रारंभिक कालीन लौकिक साहित्य की रचनाएँ हैं जबकि रणमल छंद प्रारंभिक कालीन चारण साहित्य की रचना है।

59. Ans. 1

उपर्युक्त प्रश्नानुसार विकल्प 2, 3 व 4 पूर्णतया सत्य है जबकि विकल्प 1 असत्य है क्योंकि भरतेश्वर बाहुबली रास व्रजसेन सूरि की रचना न होकर शालिभद्र सूरि की रचना है।

व्रजसेन सूरि की रचना **भरतेश्वर बाहुबली घोर** है जो राजस्थानी भाषा की पहली रचना मानी जाती है।

60. Ans. 1

- राज्य स्तर पर 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' की शुरूआत 29 मई को केन्द्रीय मंत्री भागीरथ चौधरी ने रलावता, अजमेर से की।
- यह अभियान राजस्थान के सभी जिलों के 3959 गांवों में चलाया गया व इससे 7.90 लाख किसान लाभांवित हुए।

61. Ans. 3

- 30 अप्रैल, 2025 को राज्य सरकार ने अधिसूचना जारी कर 'इलेक्ट्रोथैरेपी चिकित्सा पद्धति बोर्ड' का गठन किया।
- इस बोर्ड में एक अध्यक्ष व पाँच सदस्य होंगे-
  अध्यक्ष: आयुर्वेद आयुष विभाग के प्रमुख सचिव
  सदस्य: हेमंत सेठिया, गोविंदलाल सैनी, कुलदीप वर्मा, हरिसिंह बूमरा एवं एसएस पावेदिया।
- सचिव एवं कार्यकारी अधिकार: निदेशक आयुर्वेदिक विभाग

62. Ans. 3

- खेलो इण्डिया यूथ गेम्स के 7वें संस्करण का आयोजन 4 से 15 मई तक बिहार की मेजबानी में किया गया। इन खेलों में राजस्थान कुल 60 (24 स्वर्ण, 12 रजत व 24 कांस्य) पदक जीतकर पदक तालिका में तीसरे स्थान पर रहा।
- इन खेलों में राजस्थान की पुरुष वर्ग की कबड्डी टीम ने कांस्य, बॉस्केटबाल पुरुष वर्ग टीम ने रजत, रग्बी महिला वर्ग टीम ने कांस्य पदक जीते।
- इन खेलों में राजस्थान ने सर्वाधिक 14 पदक (9 स्वर्ण, 2 रजत, 3 कांस्य) साइक्लिंग में जीते। (साइक्लिंग में राजस्थान देश में शीर्ष पर रहा)

63. Ans. 1

- प्राइम पॉइंट फाउंडेशन द्वारा 15वें संसद रत्न अवॉर्ड 2025 हेतु लोकसभा एवं राज्यसभा के 17 सांसदों तथा दो संसदीय स्थायी समितियों को उनके उत्कृष्ट संसदीय प्रदर्शन हेतु नामित किया गया है।
- राजस्थान के पुरस्कार विजेता सांसद:
  1. मदन राठौड़ (राज्यसभा सांसद, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष)
  2. पी.पी. चौधरी (लोकसभा सांसद, भाजपा)

64. Ans. 3

- देवनारायण कॉरीडार – भीलवाड़ा
- राजस्थान का तीसरा प्रधानमंत्री दिव्याशा केन्द्र – कोटा
- राजस्थान का पहला साइबर सपोर्ट सेन्टर – जयपुर
- राजस्थान का पहला वन्दे भारत मेंन्टेनेंस डिपो – जोधपुर

65. Ans. 3

- बीपीएल परिवारों को स्वरोजगार से जोड़कर गरीबी रेखा से ऊपर लाने के उद्देश्य से 'पंडित दीनदयाल उपाध्याय गरीबी मुक्त गांव योजना' लागू की गई है।
- योजना के प्रथम चरण में प्रत्येक जिले से 122 गांव (कुल 5002 गांव) चिन्हित किए गए हैं।
- इन चिन्हित परिवारों को 21 हजार रुपये की आर्थिक सहायता और आत्मनिर्भर कार्ड दिया जाएगा।

66. Ans. (4)

♦ विकास सदैव वृद्धि को प्रभावित करे ऐसा आवश्यक नहीं है क्योंकि विकास सार्थक वृद्धि के अभाव में देखा जा सकता है। जैसे- संज्ञानात्मक, सामाजिक, नैतिक विकास आदि।

67. Ans. (2)

♦ वृद्धि विकास का एक भाग है जिसका संबंध मात्रात्मक शारीरिक बढ़ोतरी से है। वृद्धि परिपक्वता पर आकर समाप्त हो जाती है और विकास मृत्यु तक जारी रहता है। अत: वृद्धि के अभाव में देखा जा सकता है।

68. Ans. (1)

69. Ans. (3)

♦ अलग-अलग बच्चे चलने की प्रक्रिया के अलग-अलग चरण में हैं। अत: यह व्यक्तिगत भिन्नता के सिद्धांत से संबंधित है। पीडियाट्रीशियन का कथन सिफैलोकॉडल सिद्धांत की पुष्टि करता है। वहीं यह कहना कि भले समय कम या ज्यादा लगे यह सभी के लिए सामान्य प्रक्रिया है, समान प्रतिमान के सिद्धांत से संबंधित है।

70. Ans. (2)

♦ राहुल का पहले टूटे हुए निवाले खाना और फिर स्वयं निवाले तोड़कर खाना एकीकरण (इंटीग्रेशन) के सिद्धांत की पुष्टि करता है।

71. Ans. (2)

♦ विकास परिपक्वता और अधिगम का गुणनफल है।

72. Ans. (1)

♦ उत्तर बाल्यावस्था में कामवासना सुप्त रहती है। अधिकांश समय सामाजिक उपलब्धियों के कार्यों में बीतता है।

73. Ans. (1)

♦ एरिक्सन के अनुसार 1 वर्ष आसक्ति के विकास का उचित समय है।

74. Ans. (4)

♦ पूर्व बाल्यावस्था के नाम :-
खिलौनों की अवस्था
समूह पूर्व अवस्था
विद्यालय पूर्व अवस्था
तैयारी की अवस्था (अध्यापक)
समस्या की अवस्था (माता-पिता)

75. Ans. (2)

♦ 6 माह में लगभग दाँत आते हैं। (अस्थायी दूध के दाँत) हालांकि दाँतों का निर्माण गर्भावस्था में हो जाता है।

76. Ans. (1)

♦ जिन कार्यों में छोटी मांसपेशियों का प्रयोग हो, उन्हें सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल कहते हैं। जैसे- लिखना, वाद्ययंत्र बजाना आदि।

77. Ans. (1)

♦ मैक्डूगल द्वारा प्रदत्त 14 मूल प्रवृत्ति संवेग की सूची में भूख का संबंध भोजनान्वेषण से है।

78. Ans. (2)

♦ कोल व ब्रूस के अनुसार बाल्यावस्था संवेगात्मक विकास का अनोखा काल है।

79. Ans. (1)

♦ सामाजीकरण की पहली इकाई परिवार है।

कलाम ACADEMY

80. Ans. (2)

♦ ईर्ष्या 18 माह में विकसित होती है।

81. Ans. (3)

♦ लैंगिक अंतर को समझना शैशवावस्था का विकासात्मक कार्य है।

82. Ans. (1)

♦ न्यूरी बॉनफेनबेनर के पारिस्थितिकी मॉडल में क्रोनोसिस्टम (घटनामंडल) एक ऐसा तंत्र है जो सामाजिक आर्थिक पक्ष यहाँ तक की जीवन को ही पूरी तरह बदल के रखे दे। जैसे- युद्ध, सुनामी, सड़क हादसा आदि।

83. Ans. (4)

♦ ब्रूनर का सिद्धांत नैतिक विकास नहीं संज्ञानात्मक विकास से है जिसके उन्होंने तीन चरण बताये हैं-

सक्रिय :-	जन्म - 2 वर्ष
प्रतिबिम्बात्मक :-	2- 7 वर्ष
संकेतात्मक :-	7 - 11 वर्ष

84. Ans. (2)

♦ वस्तुओं को उनके गणितीय मात्रात्मक मानक जैसे लम्बाई, चौड़ाई आदि के आधार पर वर्गीकृत करने की क्षमता श्रेणीकरण (पंक्तिबद्धता) कहलाती है।

85. Ans. (1)

♦ पूर्व संक्रियात्मक अवस्था में बच्चा चिन्हों, प्रतीकों, प्रतिबिम्बों से संज्ञान का निर्माण करता है क्योंकि इस अवस्था में भाषा और कल्पना तीव्रता से विकसित होती है।

86. Ans. (2)

♦ सामाजिक क्रम संपोषित उन्मुखता में व्यक्ति मानता है कि नियम सर्वोपरि है और हर व्यक्ति को नियमों का पालन करना चाहिए।

87. Ans. (2)

♦ Pre convential स्तर में नैतिक निर्णय व्यक्तिगत लाभ और सजा से बचने पर आधारित होते हैं क्योंकि इस स्तर पर नैतिकता के मानक दूसरों के द्वारा तय होते हैं।

88. Ans. (3)

♦ अच्छा लड़का, भली लड़की की अवस्था में नैतिकता, सामाजिक प्रतिष्ठा, प्रशंसा से तय होती है। लोग क्या कहेंगे, दुनिया क्या सोचेगी ऐसी बातें।

89. Ans. (1)

♦ एरिक्सन के मनोसामाजिक विकास के सिद्धांत में एक चार वर्ष के बालक का संबंध पहल बनाम दोष की अवस्था से है।

90. Ans. (1)

♦ स्कैफॉल्डिंग अस्थायी मदद की वह मात्रा है जो अधिगमकर्त्ता को विकास के एक स्तर से दूसरे स्तर पर पहुँचाती है।

91. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- पुरातत्त्वविदों को पुराना किला (दिल्ली), मेरठ (उत्तरप्रदेश) के निकट हस्तिनापुर व एटा के निकट अतंरजीखेड़ा से कई जनपदकालीन बस्तियाँ प्राप्त हुई है।

92. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- महाजनपदों की राजधानियों की किलेबंदी की गई थी। इस तरह की कौशाम्बी किले की एक दीवार इलाहाबाद के पास से प्राप्त हुई है जो ईंटों से निर्मित थी।
- महाजनपदकाल में बौद्ध तथा जैन सहित विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं का विकास हुआ।

93. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- सोलह महाजनपदो की सर्वप्रथम जानकारी बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय में मिलती है। अंगुत्तरनिकाय सुतपिटक का भाग है जिसकी रचना पालि भाषा में की गई है।

कलाम ACADEMY

94. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- छठी से चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में मगध सबसे शक्तिशाली महाजनपद था।
- मगध के आस-पास लोहे की प्रचूरता थी। लोहे से उन्होंने मजबूत औजार व हथियारों का निर्माण किया।
- व्यापारिक मार्ग एवं लौहे के अयस्क की बहुतायतता के कारण गंगा नदी क्षेत्र में नगरों का विकास हुआ।
- हाथी सेना होने के कारण मगध अन्य महाजनपदों को जीतकर भारत के प्रथम विशाल साम्राज्य के रुप में विकसित हुआ।
- मगध साम्राज्य पर **हर्यंक वंश** (बिम्बिसार, अजातशत्रु), **शिशुनाग वंश** (शिशुनाग), **नंद वंश** (महापदम् नंद, घनानंद) ने शासन किया।
- मगध साम्राज्य की प्रारंम्भिक राजधानी गिरिव्रज थी इसका अन्य नाम कुशाग्रपुर था। बिम्बिसार ने कालांतर में राजगृह को नयी राजधानी बनाया।

95. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- अंग महाजनपद की राजधानी चम्पा थी। अंग महाजनपद वर्तमान स्थिति के अनुसार बिहार के मुंगेर-भागलपुर जिलों के क्षेत्र में स्थित था।
- चेदि महाजनपद की राजधानी शुक्तिमती थी। चेदि महाजनपद वर्तमान स्थिति के अनुसार यमुना के किनारे बुंदेलखंड और झाँसी के क्षेत्र में स्थित था।
- गान्धार महाजनपद की राजधानी तक्षशिला थी। गान्धार महाजनपद वर्तमान स्थिति के अनुसार पूर्वी अफगानिस्तान और कश्मीर घाटी में फैला हुआ था।

- अश्मक महाजनपद की राजधानी पोटन (पोटली) थी। अश्मक महाजनपद वर्तमान स्थिति के अनुसार गोदावरी नदी के दक्षिण में स्थित था। यह एकमात्र महाजनपद था जो कि दक्षिण में स्थित था।

96. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- चेदि महाजनपद की राजधानी शुक्तिमती थी। चेदि महाजनपद वर्तमान स्थिति के अनुसार यमुना के किनारे बुंदेलखंड और झाँसी के क्षेत्र में स्थित था। इस महाजनपद का उल्लेख ऋग्वेद में भी मिलता है। यहाँ के शासक शिशुपाल का उल्लेख महाभारत में भी हुआ है।

97. उत्तर (3)

व्याख्या:-

महाजन पद का नाम	राजधानी
अंग	चम्पा
मगध	गिरिव्रज/राजगृह/पाटलिपुत्र
काशी	वाराणसी
कोशल	श्रावस्ती (उत्तरी कोशल), कुशावती (दक्षिणी कोशल)
वज्जि	वैशाली व मिथिला
मल्ल	कुशीनारा, पावा
चेदि	शुक्तिमती
वत्स	कौशाम्बी
गान्धार	तक्षशिला
कम्बोज	राजपुर या हाटक
अवन्ति	उज्जयिनी (उत्तरी अवन्ति), महिष्मति (दक्षिणी अवन्ति)
अश्मक	पोटन (पोटली)
शूरसेन	मथुरा
मत्स्य	विराटनगर (बैराठ)
पांचाल	अहिच्छत्र (उत्तरी पांचाल), कांपिल्य (दक्षिणी पांचाल)
कुरु	इन्द्रप्रस्थ/हस्तिनापुर

कलाम ACADEMY

98. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- वज्जि एवं मल्ल महाजनपदों में गणतंत्रात्मक शासन व्यवस्था विद्यमान थी। वज्जि महाजनपद 8 राज्यों का संघ था-

राज्य	वंश/कुल
कपिलवस्तु	शाक्य
रामग्राम	कोलिय
सुंसुमारगिरी	भग्ग
अल्लकप्प	बुली
पिप्पलिवन	मोरिय
मिथिला	विदेह
वैशाली	लिच्छवि
केसपुत्त	कालाम
कुशीनारा	मल्ल
पावा	मल्ल

99. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- महाजनपदकालीन युग में कृषि के क्षेत्र में दो बड़े परिवर्तन आए-

1. लौहे की खोज के बाद हल के फाल लौहे के बनाए जाने लगे जिससे जमीन जोतना पूर्व से अधिक आसान हो गया।
2. इस काल में धान (चावल) के पौधों का रोपण प्रारम्भ हुआ। ये पौधे बीज छिड़ककर तैयार पौधों से अधिक जीवित रहते थे। इस कारण पैदावार में वृद्धि हुई।

नोट:- रोपण में श्रम हेतु दास, दासी तथा भूमिहीन खेतिहर मजदूर (कामकार) का उपयोग किया जाता था।

100. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- आचार्य चाणक्य (विष्णुगुप्त) के सहयोग से 25 वर्ष की आयु में चन्द्रगुप्त मौर्य ने नंदवंश के अंतिम शासक घनानंद को हराकर मौर्य साम्राज्य की स्थापना 321-22 ई. पू. में की थी।
- चन्द्रगुप्त मौर्य की चंद्रगुप्त संज्ञा का प्राचीनतम अभिलेखीय साक्ष्य रूद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख से मिलता है।

101. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- चंद्रगुप्त मौर्य ने 305 ई.पू. में सिकंदर के उत्तराधिकारी **सेल्यूकस निकेटर** को परास्त करके उससे कंधार (अराकोसिया), काबुल (पैरोपैनिसडाई), हैरात (एरिया) व ब्लूचिस्तान (जेड्रोसिया) का कुछ भाग प्राप्त किया था। वहीं चन्दुगुप्त मौर्य ने सेल्यूकस को 500 हाथी दिए थे।
- चंद्रगुप्त मौर्य ने सेल्यूकस निकेटर की पुत्री **हेलना से विवाह** भी किया था।

102. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- चन्द्रगुप्त मौर्य के पुत्र बिन्दुसार के काल की उपलब्धि यही रही कि उसने विशाल मौर्य साम्राज्य को यथावत् बनाये रखना।
- आचार्य चाणक्य बिंदुसार के भी प्रधानमंत्री थे। इसने 272 ई. पू. तक शासन किया।
- बिन्दुसार आजीवक धर्म का अनुयायी था।
- बिन्दुसार को यूनानी लेखक अमित्रोचेट्स/अलित्रोचेट्स कहते थे।
- वायु पुराण में बिन्दुसार को 'भद्रसार' कहा गया है।
- जैन ग्रंथों में इसका नाम 'सिंहसेन' मिलता है।
- स्ट्रेबो ने - 'अलिट्रोकेड्स' और
- फ्लीट ने - 'अमित्रघात' (शत्रुओं का वध करने वाला) कहा है।
- दिव्यादान के अनुसार तक्षशिला में बिंदुसार के समय दो विद्रोह हुए, जिनके दमन हेतु क्रमशः अशोक व सुसीम को भेजा गया।
- दिव्यावदान में 500 सदस्यों की एक सभा का उल्लेख है जो बिन्दुसार को प्रशासनिक कार्य में सहायता देती थी।

103. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- चाणक्य चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में प्रधानमंत्री तथा तक्षशिला के शिक्षक थे।
- उन्होंने अर्थशास्त्र नामक पुस्तक लिखी जिसमें मौर्यकालीन साम्राज्य की राजव्यवस्था एवं शासन प्रणाली के बारें में जानकारी मिलती है।
- चाणक्य (कौटिल्य/विष्णुशर्मा) के अनुसार राज्य के सात अंग होते थे- राजा, अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, बल, कोष, मित्र।

कलाम ACADEMY

104. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- अशोक के द्वितीय शिलालेख एवं तेरहवें शिलालेख में दक्षिण भारतीय राज्यों का उल्लेख मिलता है-
- **द्वितीय शिलालेख**-इसमें अशोक द्वारा मनुष्यों एवं पशुओं के लिए चिकित्सा प्रबंध करने का उल्लेख हुआ है तथा साथ ही अशोक के सीमावर्ती (पड़ौसी) राज्यों का उल्लेख हुआ है- चोल, पाण्ड्य, सतीयपूत, केरलपूत (चेर), ताम्रपर्णी (श्रीलंका) आदि।
- **तेरहवां शिलालेख**-यह शिलालेखों में सबसे बड़ा शिलालेख है।

इसमें राज्याभिषेक के 8वें वर्ष बाद हुए कलिंग युद्ध का वर्णन है, जिसमें विजय के बाद अशोक को पश्चाताप् होने का उल्लेख भी मिलता है। इसमें अशोक द्वारा आटविक (जंगली) जन जातियों को दी गई सैन्य चेतावनी का उल्लेख मिलता है। इसमें अशोक द्वारा पड़ौसी (चोल, पाण्ड्य, ताम्रपर्णी), विदेशी (एण्टियोकस द्वितीय, एण्टिगोनस, टॉलमी, मेगस, अलेक्जेण्डर) एवं अर्द्धस्वतंत्र जातियों (यवन, नायक, कम्बोज, पुलिंद) के राज्यों में धम्मविजय प्राप्त करने का उल्लेख मिलता है।

105. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- चन्द्रगुप्त मौर्य अपने अंतिम दिनों में जैन साधु भद्रबाहु से दीक्षा लेकर जैन धर्म का अनुयायी बन गया था।
- बिन्दुसार आजीवक धर्म का अनुयायी था।
- मौर्य शासक अशोक एवं दशरथ बौद्ध धर्म के अनुयायी थे।

106. उत्तर (3)

व्याख्या:-

तृतीय शिलालेख-राज्याभिषेक के 12वें वर्ष रज्जुक, युक्त, प्रादेशिक अधिकारियों की नियुक्ति का उल्लेख हुआ है।

107. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- धम्म संस्कृत शब्द है जो धर्म का प्राकृत रूप है। अशोक ने मनुष्य की **नैतिक उन्नति** के लिए जिन **आदर्शों** का प्रतिपादन किया उन्हें 'धम्म' कहा गया।
- अशोक के धम्म की परिभाषा **दूसरे एवं सातवें स्तम्भलेख** में दी गई है।
- धम्म के बुनियादी सिद्धांतों में अशोक ने सर्वाधिक बल **सहिष्णुता** पर दिया। प्रथम स्वयं व्यक्तियों की सहिष्णुता, द्वितीय विभिन्न विचारों, विश्वासों, धर्मों एवं भाषाओं में सहिष्णुता।
- धम्म किसी देवता की पूजा या किसी कर्मकाण्ड से संबंधित नहीं होकर जनता को निर्देशित करने का कर्त्तव्य था। इस हेतु अशोक ने धम्म महामात्र नामक अधिकारियों की नियुक्ति की जो जगह-जगह जाकर धम्म की शिक्षा देते थे।

108. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- अशोक के 5वें शिलालेख के अनुसार अशोक ने अपने राज्याभिषेक के 13वें वर्ष में उच्चधर्माधिकारी धर्म महामात्र की नियुक्ति की थी। जिसका कार्य धम्म की शिक्षा देना था।

109. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- मौर्य प्रशासन में राजा को परामर्श देने के लिए मंत्रिपरिषद् थी जिसमें मंत्रियों की नियुक्ति वंश व योग्यता के आधार पर राजा करता था।
- मंत्रिपरिषद् में एक आंतरिक परिषद् होती थी जिसे ''मन्त्रिण्'' कहा जाता था। इसमें 3 से 4 सदस्य होते थे।
- मौर्य प्रशासन में सबसे महत्त्वपूर्ण पदाधिकारी तीर्थ होते थे।
- अर्थशास्त्र में 18 विभागों तथा 26 अध्यक्ष का उल्लेख है, विभागों को 'तीर्थ' कहा गया है। तीर्थ के अध्यक्ष को 'अमात्य' कहा गया है।

कलाम ACADEMY

110. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- यूनानी शासक सेल्यूकस निकेटर ने मेग्स्थनीज को चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में अपना दूत बनाकर भेजा जिसने पाटलिपुत्र में रहकर इंडिका नामक पुस्तक लिखी।
- इंडिका से मौर्यकालीन शासन व्यवस्था की जानकारी प्राप्त होती है। वर्तमान में इण्डिका हमें अपने वास्तविक रूप में नहीं मिलती है, परंतु अनेक यूनानी लेखकों ने इण्डिका की कुछ घटनाओं को अपने साहित्य में स्थान दिया है।
- मेग्स्थनीज ने पाटलिपुत्र नगर प्रबंध के लिए छ: समितियों का उल्लेख किया जिसमें प्रत्येक समिति में 5 सदस्य होते थे।

समिति	कार्य
प्रथम समिति	औद्योगिक व शिल्प संबंधित कार्य (मजदूरी दर व कार्य समय का निर्धारण)
द्वितीय समिति	विदेशियों की देख-रेख
तृतीय समिति	जनगणना, जन्म-मृत्यु का पंजीकरण (गोप नामक राजपुरुष जनगणना का कार्य करते थे।)
चतुर्थ समिति	वाणिज्य-व्यापार की देखरेख, माप-तोल नियंत्रण।
पंचम समिति	उद्योग (वस्तुओं में मिलावट रोकना, विक्रय का निरीक्षण)
षष्टम समिति	बिक्री कर तथा चुंगी कर (बिक्री कर-1/10 की दर से), कर की चोरी करने वालों को मृत्युदण्ड।

111. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- अशोक ने आजीवकों के लिए बराबर (बिहार) में स्थित पहाड़ियों को काटकर कर्ण-चौपड़, सुदामा तथा विश्व झौपड़ी नामक तीन गुफाएं बनवायी तथा लेख लिखवाये।
- लोमेशऋषि की गुफा (बराबर की पहाड़ियों में निर्मित) का निर्माण अशोक के पौत्र दशरथ ने करवाया था। अशोक के पौत्र दशरथ ने नागार्जुनी गुफाएँ आजीवकों को दान में दी थी।

112. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- ईसवाल (उदयपुर) से मौर्यकालीन लौह प्रगलन भट्टियों के अवशेष प्राप्त हुए है।
- बिहार के रामपुरवा से मौर्यकालीन स्तंभ प्राप्त हुआ है जिसमें बैल का चित्रांकन मिलता है जो वर्तमान में राष्ट्रपति भवन में रखा गया है।
- बैराठ से मिले भाब्रू शिलालेख में अशोक ने बुद्ध के त्रिरत्नों बुद्ध, धम्म एवं संघ के प्रति आस्था प्रकट की थी।

113. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- अंतिम मौर्य शासक 'ब्रहद्रथ' था, जिसकी 185 ई. पू. में उसी के सेनापति 'पुष्यमित्र' ने हत्या कर एक नए शुंग साम्राज्य की नींव डाली।

114. उत्तर (3)

- एरोसॉल में समुद्री लवण, महीन मृदा, धुआं, पराग कण और कालिख (soot) होता है।
- वायु में एरोसॉल सूर्योदय व सूर्यास्त के समय लाल और संतरी रंग के विविध प्रकार बनाने में योगदान करते हैं।
- अधिकांश एयरोसोल भी क्षोभमण्डल परत में पाये जाते है इसलिए सभी मौसमी घटनाएँ जैसे:- कोहरा, बादल, वर्षा, हिमपात आदि क्षोभमण्डल में ही घटित होते है। अत: इसे मौसमी परिवर्तनों का मण्डल भी कहा जाता है।
- एरोसॉल ऐसी सतह के रूप में कार्य करते हैं जिन पर जल वाष्प द्रवित हो जाती है।

115. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- हाइड्रोजन - 0.00005 %
- हीलियम - 0.0005 %
- ओजोन - 0.00006 %
- निऑन - 0.0018 %

116. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- राजस्थान में 4 दिसम्बर 2024 को राजस्थान सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम नीति (एमएसएमई नीति)2024 जारी की गई। जो 31 मार्च 2029 तक लागू रहेगी।

117. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- **क्षोभमण्डल :**
- समुद्र तल से ऊपर की ओर जलवाष्प की मात्रा घटती जाती है वायुमण्डल की कुल जलवाष्प का लगभग 90% पृथ्वी की सतह से 5 किमी. की ऊँचाई तक पाया जाता है तथा वायुमण्डल के सम्पूर्ण जलवाष्प का 99% से अधिक क्षोभमण्डल में ही पाया जाता है

118. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- वायुमंडल की लम्बवत् परतों को पृथ्वी से बाहर की ओर क्रमबद्ध निम्नलिखित रूप से है–
- ट्रोपोस्फीयर
- स्ट्रेटोस्फीयर
- ओज़ोनोस्फीयर
- आयनोस्फीयर

119. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- क्षोभसीमा में विषुवत रेखीय क्षेत्रों पर तापमान –80°C होता है जिसे शीत बिन्दु की स्थिति कहा जाता है तथा ध्रुवीय क्षेत्रों पर –45°C होता है।

120. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- पृथ्वी के वायुमंडल में CO_2 की उपस्थिति आवश्यक है। CO_2 ताप को अवशोषित कर सकती है।
- यह ग्रीन हाउस गैसों की श्रेणी में आती है जो सौर विकिरण को धरातल पर आने तो देती है, परन्तु पार्थिव विकिरण की जो मात्रा अन्तरिक्ष की ओर जाती है उसमें से कुछ मात्रा का अवशोषण कर लेती है। जिससे पृथ्वी पर औसत तापमान 15° सेल्सियस बना रहता है। यदि वायुमण्डल में कार्बन-डाई-ऑक्साइड नहीं हो तो सम्पूर्ण पार्थिव विकिरण अन्तरिक्ष में चला जायेगा तथा पृथ्वी पर औसत तापमान –20° सेल्सियस हो जायेगा जिसमें जीवन संभव नहीं है।

121. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- क्षोभ मंडल - ऊँचाई बढ़ने के साथ तापमान घटता है।
- समताप मंडल - इसमें वायुमंडल की ओजोन की कुल मात्रा का अधिक भाग है।
- आयन मंडल - उत्तरी ध्रुवीय ज्योति या दक्षिणी ध्रुवीय ज्योति उत्पन्न होती है।
- बहिर्मंडल - ऑक्सीजन, हाइड्रोजन तथा हीलियम के परमाणुओं से विरल वायुमंडल बनता है।

122. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- **F परत**- ऊँचाई 150 किमी. से 380 किमी. की ऊँचाई तक।
  इसे **अप्लीटन परत** भी कहा जाता है।
- यह परत भी दिन के समय F_1 व F_2 नामक परतों में विभक्त रहती है।
- इस परत से रेडियो की लघु तरंगे या उच्च आवृत्ति वाली तरंगे परावर्तित होती है।

123. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- **वायुमण्डल का रासायनिक वर्गीकरण:- मार्शल निकोलेट** ने रासायनिक आधार पर वायुमण्डल को 2 परतों में बाँटा है:-
- **सममण्डल (Homosphere):-** पृथ्वी के सतह से 90 किमी. की ऊँचाई तक का भाग जिसमें वायुमण्डलीय गैसों का अनुपात स्थिर रहता है। इसमें क्षोभमण्डल, समताप मण्डल व मध्य मण्डल शामिल है।

124. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- नाइट्रोजन - 78%
- ऑर्गन - 0.93%
- ऑक्सीजन - 21%
- कार्बन डाइऑक्साइड - 0.039%

125. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- एक नगर समुद्र तल से 825 मीटर ऊँचा है और जून का औसत तापमान 15°C है। यदि यह नगर समुद्र तल पर होता है तो यहाँ तापमान 20°C होगा।
- सामान्यत: 10 मीटर की ऊँचाई पर वायुदाब में 1 मिलीमीटर की गिरावट आती है तथा 300 मीटर (लगभग 1000 फीट) की ऊँचाई पर 34 मिलीबार की गिरावट आती है।

ऊँचाई	**वायुदाब**	**तापमान**
10 km	265 mb	–49.20°C
5 km	540.40 mb	–17.3°C
1 km	898.76 mb	8.7°C
समुद्रतल	1013.25 mb	15.2°C

- समुद्र तल से 5 किमी. की ऊँचाई पर वायुदाब घटकर लगभग आधा रह जाता है।

126. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- वायुमण्डलीय गैसों में नाइट्रोजन, ऑक्सीजन व ऑर्गन का अनुपात स्थिर पाया जाता है, इसलिए इन्हें स्थिर या अपरिवर्तनशील गैसें कहा जाता है।

		नाइट्रोजन (N_2)	78.08%	स्थिर/ अपरिवर्तनशील गैसे (90 km तक)
		ऑक्सीजन (O_2)	20.94%	
अक्रिय	←	ऑर्गन (Ar)	0.93%	
		कार्बन-डाई ऑक्साइड (CO_2)	0.03%	अस्थिर गैसे
अक्रिय	←	निऑन (Ne)	0.0018%	
अक्रिय	←	हीलियम (He)	0.0005%	
		मिथेन (CH_4)	0.00018%	
अक्रिय	←	क्रिप्टोन (Kr)	0.00011%	
		ऑजोन (O_3)	0.00006%	
		हाइड्रोजन (H_2)	0.00005%	
अक्रिय	←	जिनोन (Xe)	0.000009%	

127. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- वायुमण्डल का सर्वाधिक भाग परिवर्तन मण्डल में पाया जाता है।
- **क्षोभमण्डल (Troposphere):-** यह वायुमण्डल की सबसे निचली परत है जिसे विक्षोभ मण्डल या संवहन मण्डल या मिश्रण मण्डल या अधोमण्डल या मौसमी परिवर्तनों का मण्डल आदि नामों से भी जाना जाता है।

128. उत्तर (1)

व्याख्या:-

• पेरू धारा (हम्बोल्ट धारा)	यह ठण्डी धारा है। पेरू व चिली के प. तट के सहार
• अलनीनो धारा (अस्थायी धारा)	यह गर्म धारा है। प्रति विषुवत रेखीय धारा का अग्रप्रसार जब दक्षिण अमेरिका व मध्य अमेरिका के पश्चिमी तट तक (3°S से 36°S) अक्षांश तक
• कैलिफोर्निया धारा	यह ठण्डी धारा है। यह कैलिफोर्निया तट के समानान्तर बहती है।
• नार्वे धारा	यह गर्म धारा है। यह नार्वे (स्कैण्डनेविया) तट तक।

129. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- यदि धरातल पर सर्वत्र समतल होता है व पृथ्वी घूर्णन नहीं करती है तो पवनें समदाब रेखाओं के समकोण में चलती है-

130. उत्तर (1)

व्याख्या:-

उपोष्ण उच्च दाब पेटी (Sub Tropical High Pressure Belt):- दोनों गोलार्द्धों में 30°–35° अक्षांशों के बीच।

- यहाँ पृथ्वी की घूर्णन गति के कारण विषुवत् रेखीय एवं उपध्रुवीय क्षेत्रों से ऊपर उठी वायु अभिसरित होकर नीचे की ओर बैठती है। जिस से धरातल पर उच्च वायुदाब की स्थिति बन जाती है।

- अर्थात् यहाँ पृथ्वी की घूर्णन गति के कारण वायु का अवतलन होने से उच्च दाब की स्थिति बनती है अत: यह गतिजन्य वायुदाब पेटी है। उपोष्ण वायुदाब पेटी में हवाओं की गति अवरोही होती है।
- उपोष्ण उच्च दाब पेटियों से व्यापारिक एवं पछुआ पवनों के रूप में वायु का अपसरण होता है तथा इस वायुदाब पेटी में भी क्षैतिज हवाएँ नहीं चलती है एवं वायु का अवतलन भी होता है जिसके कारण पुराने समय में जब घोड़ों से भरे जहाज इन अक्षांशों से होकर गुजरते थे तो आगे नहीं बढ़ पाते थे। इसलिए कुछ घोड़े समुद्र में फेंक दिये जाते थे जिससे जहाज हल्का होकर आगे बढ़ जाता था। अत: 30°–35° के अक्षांशों को अश्व अक्षांश (Horse Latitude) भी कहा जाता है।

131. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- यह पृथ्वी के आवर्तन का प्रभाव है।
- कोरियालिस बल का मान भूमध्य रेखा पर शून्य होता है एवं ध्रुवों पर अधिकतम होता है क्योंकि कोरियालिस बल का मान अक्षांश के समानुपाती होता है (कोरियालिस बल अक्षांश की ज्या (Sine) के समानुपाती होता है) अत: हवाओं की दिशा में विक्षेपण ध्रुवों के निकट सर्वाधिक होता है। अर्थात् ध्रुवीय पवनों का विक्षेपण सर्वाधिक होता है एवं व्यापारिक पवनों का विक्षेपण सबसे कम होता है।
- वायुमण्डल में अधिक ऊँचाई पर चलने पर घर्षण बल का प्रभाव शून्य हो जाता है एवं कोरियालिस बल हवाओं को अधिकतम विक्षेपित कर दाब प्रवणता बल के समकोण पर कर देता है। जिसके कारण हवाएँ समदाब रेखाओं के समानान्तर चलने लगती है। ऊपरी वायुमण्डल में चलने वाली ऐसी हवाओं को भू-विक्षेपी पवन या भूव्यावर्ती पवन (Geostropic Winds) कहा जाता है।

132. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- यदि धरातल पर वायुदाब 1000 मिलीबार है, तो धरातल से 1 किमी. की ऊँचाई पर वायुदाब 898.76 मिलीबार होगा।

133. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- विकिरण – ऊर्जा का एक स्थान से दूसरे स्थान पर बिना माध्यम के जाना विकिरण कहलाता है। जैसे – सूर्य की किरणों द्वारा पृथ्वी को गर्म करना।
- अभिवहन – वायु के क्षैतिज संचलन से होने वाला ताप का स्थानान्तरण अभिवहन कहलाता है।
- एल्बिडो – किसी सतह द्वारा सूर्य के प्रकाश का परावर्तित मात्रा/अंश एल्बीडो कहलाता है।
- संवहन – पदार्थों के द्रव्यमान के संचलन द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान में ऊष्मा के स्थानान्तरण की प्रक्रिया को संवहन कहा जाता है।

134. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- **घाटी समीर:-** ये दिन के समय घाटी से पर्वत शिखरों की ओर चलती है क्योंकि दिन में घाटी की वायु गर्म व हल्की होकर पर्वतीय ढालों के सहारे ऊपर की ओर उठती है। इसे एनाबेटिक पवन (आरोही पर्वत पवन) भी कहा जाता है।

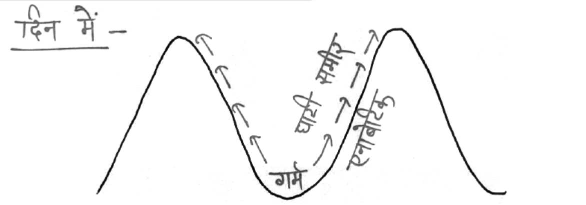

135. उत्तर (3)

व्याख्या:-

जेट स्ट्रीम

- क्षोभमण्डल के ऊपरी स्तर में क्षोभ-सीमा के पास (9-13 किमी. की ऊँचाई पर) अत्यधिक तीव्र गति से पश्चिम से पूर्व की ओर बहने वाली हवाओं को जेट स्ट्रीम कहते है।
- ये सँकरी, सर्पीली एवं तेज गति वाली वायुधाराओं की पट्टियाँ है जो पृथ्वी का चक्कर लगाती रहती है।
- इनकी लंबाई हजारों किमी., चौड़ाई सैकड़ों किमी. तथा मोटाई 3 से 4 किमी. होती है।

कलाम ACADEMY

136. उत्तर (2)

व्याख्या:-

पवनें	क्षेत्र
• गिबली	लीबिया
• खमसीन	मिश्र
• चिनूक	उत्तरी अमेरीका
• फॉन	दक्षिणी यूरोप

137. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- उत्तरी गोलार्द्ध में निम्न दाब के चारों तरफ पवनों की दिशा घड़ी की सुइयों के चलने की दिशा के विपरीत होगी।

138. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- मानसूनी पवन, एक सामयिक पवन है।
- उत्तरी गोलार्द्ध में पछुआ पवनो की दिशा उत्तर-पूर्व की ओर होती है।
- समुन्द्रतल पर औसत वायुमंडलीय दाब 1013.2 मिलीबार होता है।
- वायुमंडल के निचले भाग में ऊँचाई की ओर बढ़ने पर वायुदाब ह्रास दर 1 मिलीबार प्रति 165 मीटर है।

139. उत्तर (2)

व्याख्या:-

तापजन्य वायुदाब पेटियाँ:-

(i) विषुवतरेखीय निम्न दाब पेटी

(ii) उत्तरी ध्रुवीय उच्च दाब पेटी

(iii) दक्षिणी ध्रुवीय उच्च दाब पेटी

गतिजन्य वायुदाब पेटियाँ:-

(i) उत्तरी उपोष्ण उच्च दाब पेटी

(ii) दक्षिणी उपोष्ण उच्च दाब पेटी

(iii) उत्तरी उपध्रुवीय निम्न दाब पेटी

(iv) दक्षिणी उपध्रुवीय निम्न दाब पेटी

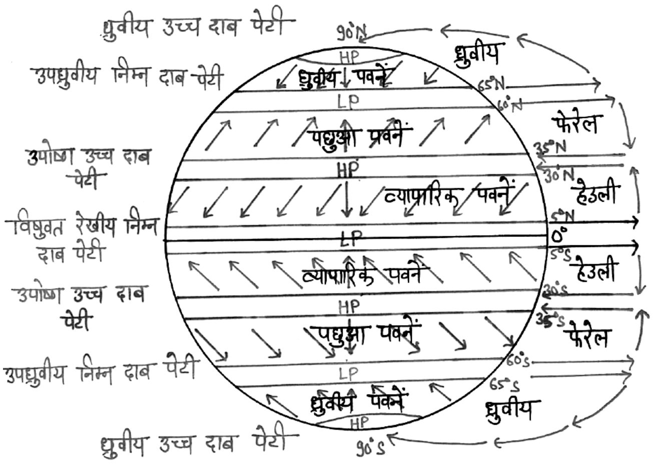

- निम्न दाब पेटियों में धरातल पर वायु का अभिसरण होकर उत्थान होती है एवं ऊपरी वायुमण्डल में अपसरण होता है।
- उच्च दाब पेटियों में ऊपरी वायुमण्डल में वायु का अभिसरण होकर नीचे की ओर अवतलन होता है एवं धरातल पर अपसरण होता है।

कलम ACADEMY

140. उत्तर (3)

व्याख्या:-

पृथ्वी पर चलने वाली हवाओं के प्रकार:-

- स्थायी/प्रचलित/भूमण्डलीय/सनातनी/वैश्विक/ग्रहीय पवनें (Permanent/Prevailing/Global/Planetary Wind)
  1. व्यापारिक पवनें 2. पछुआ पवनें/पश्चिमी पवनें
  3. ध्रुवीय पवनें
- सामयिक पवनें (Periodic Winds)
  (i) मौसमी पवनें (ii) दैनिक पवनें
- स्थानीय पवनें (Local Winds)

141. उत्तर (3)

व्याख्या:-

निर्यात संवर्धन औद्योगिक पार्क-

(EPIP - Export Promotion Industrial Park)-

- सीतापुरा, जयपुर
- बोरनाड़ा, जोधपुर
- नीमराणा, अलवर

नोट- देश का प्रथम निर्यात संवर्द्धन औद्योगिक पार्क सीतापुरा, जयपुर (1997) है।

142. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- **सहकारी क्षेत्र में राजस्थान में सूती वस्त्र मिलें-**
- **राजस्थान राज्य सहकारी कताई मिल (1965)**- गुलाबपुरा, भीलवाड़ा
- **श्रीगंगानगर सहकारी कताई समिति (1978)**- हनुमानगढ़
- **गंगापुर सहकारी कताई समिति (1981)**- गंगापुर, भीलवाड़ा
- सहकारी क्षेत्र की इन तीन कताई मिलों तथा गुलाबपुरा की एक जिनिंग मिल को मिलाकर **1 अप्रैल, 1993** को **राजस्थान राज्य सहकारी कताई संघ लिमिटेड (SPINFED)** का गठन किया गया है, जिसका **मुख्यालय जयपुर** में है।

143. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- ऑलिव टी-प्लांट - बस्सी, जयपुर
- बायोडीजल रिफाइनरी - कलड़वास, उदयपुर
- आदित्य मिल्स लिमिटेड - किशनगढ़, अजमेर
- रिलायंस कोमेटेक्स - उदयपुर

144. उत्तर (3)

व्याख्या:-

चीनी उद्योग के स्थानीयकरण को प्रभावित करने वाले कारक-
- परिवहन की सुविधा
- सल्फर व चूने की उपलब्धता
- सस्ते व कुशल श्रम की उपलब्धता आदि।

145. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- **दी गंगानगर शुगर मिल (1937)**- श्रीगंगानगर (यह निजी क्षेत्र में स्थापित) इसे 1956 में **सार्वजनिक क्षेत्र** में लिया गया तथा **1968 में यहाँ चुकन्दर से चीनी बनाने का संयंत्र** स्थापित किया गया, अर्थात् यह मिल गन्ना व चुकन्दर दोनों से चीनी बनाती है।
- इस मिल द्वारा **सार्वजनिक क्षेत्र में** शराब के उत्पादन हेतु डिस्टलरी है। इस हेतु स्प्रिट उत्पादन की इकाईयाँ गंगानगर एवं अटरू (बाराँ) में स्थापित की गई है।

146. उत्तर (3)

व्याख्या:-

औद्योगिक इकाई	जिला
• स्टेट वूलन मिल्स	बीकानेर
• वर्स्टेड स्पिनिंग मिल्स	चुरू
• विजय कोटन मिल	विजयनगर, अजमेर (1947)
• विदेश आयात-निर्यात संस्थान	कोटा

147. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- अलवर जिले का रामगढ़ स्थान 'कागजी' नामक बर्तनों के निर्माण के लिए प्रसिद्ध है।

148. उत्तर (3)

व्याख्या:-

(औद्योगिक पार्क)		**(स्थान)**
• परिधान पार्क	–	जगतपुरा (जयपुर)
• होजरी पार्क	–	भिवाड़ी (अलवर)
• मसाला पार्क	–	रामगंज (कोटा)
• टेक्सटाइल पार्क	–	सिलोरा (किशनगढ़)

149. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- **RUDA की गतिविधियाँ मुख्यत: निम्नलिखित 3 क्षेत्रों में आती है-**
- चमड़ा (हस्तशिल्प)
- ऊन व वस्त्र (हथकरघा)
- लघु खनिज (सिरेमिक पोटरी)

150. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- RIICO द्वारा बोरानाडा, जोधपुर (क्षेत्रफल में सबसे बड़ा), रणपुर (कोटा), अलवर व उद्योग विहार, श्रीगंगानगर में 04 एग्रो फूड पार्क्स की स्थापना की गई। इसके अतिरिक्त औद्योगिक क्षेत्र तिंवरी (जोधपुर) में कृषि व खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र का विकास।

कलाम ACADEMY